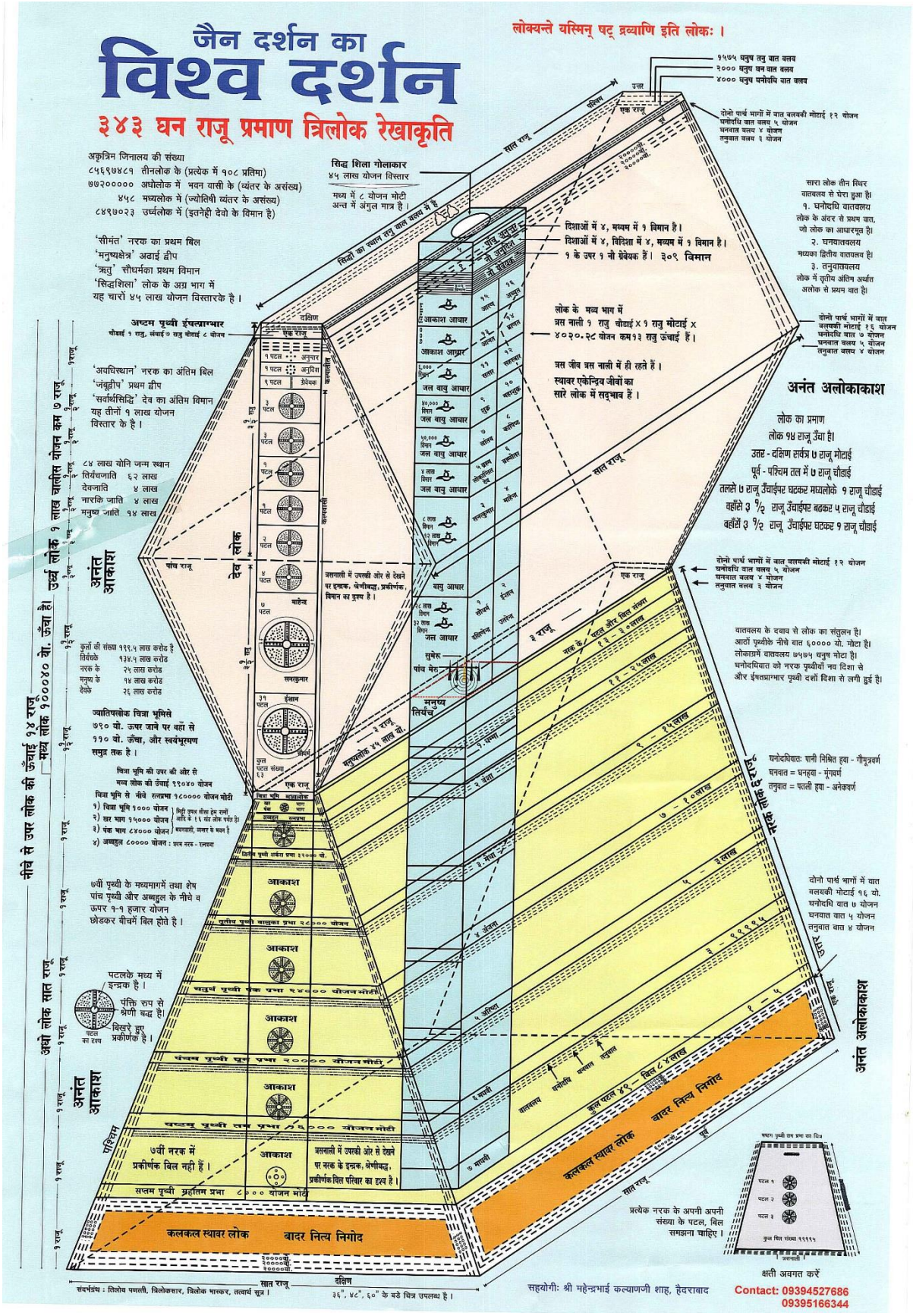

जैन दर्शन का
विश्व दर्शन
३४३ घन राजू प्रमाण त्रिलोक रेखाकृति
लोक्यन्ते यस्मिन् षट् द्रव्याणि इति लोकः ।
अकृत्रिम जिनालय की संख्या
८५६९७४८१ तीनलोक के (प्रत्येक में १०८ प्रतिमा)
७७२००००० अधोलोक में भवन वासी के (व्यंतर के असंख्य)
४५८ मध्यलोक में (ज्योतिषी व्यंतर के असंख्य)
८४९७०२३ उर्ध्वलोक में (इतनेही देवो के विमान है)
'सीमंत' नरक का प्रथम बिल
'मनुष्यक्षेत्र' अढाई द्वीप
'ऋतु' सौधर्मका प्रथम विमान
'सिद्धशिला' लोक के अग्र भाग में
यह चारों ४५ लाख योजन विस्तारके है ।
सिद्ध शिला गोलाकार
४५ लाख योजन विस्तार
मध्य में ८ योजन मोटी
अन्त में अंगुल मात्र है ।
अष्टम पृथ्वी ईषत्प्राग्भार
'अवधिस्थान' नरक का अंतिम बिल
'जंबूद्वीप' प्रथम द्वीप
'सर्वार्थसिद्धि' देव का अंतिम विमान
यह तीनों १ लाख योजन
विस्तार के है ।
८४ लाख योनि जन्म स्थान
तिर्यचजाति ६२ लाख
देवजाति ४ लाख
नारकि जाति ४ लाख
मनुष्य जाति १४ लाख
दिशाओं में ४, मध्यम में १ विमान है ।
दिशाओं में ४, विदिशा में ४, मध्यम में १ विमान है ।
१ के उपर १ नौ ग्रैवेयक हैं । ३०९ विमान
लोक के मध्य भाग में
त्रस नाली १ राजु चौडाई x १ राजु मोटाई x
४०२०-२८ योजन कम१३ राजु ऊंचाई हैं ।
त्रस जीव त्रस नाली में ही रहते हैं ।
स्थावर एकेन्द्रिय जीवों का
सारे लोक में सद्भाव हैं ।
आकाश आधार
जल वायु आधार
वायु आधार
देव लोक
सात राजू
पांच राजू
एक राजू
सुमेरु
पांच मेरु
मनुष्य
तिर्यंच
ज्योतिषलोक चित्रा भूमिसे
७९० यो. ऊपर जाने पर वहां से
११० यो. ऊँचा, और स्वयंभूरमण
समुद्र तक है ।
७वीं पृथ्वी के मध्यभागमें तथा शेष
पांच पृथ्वी और अब्बहुल के नीचे व
ऊपर १-१ हजार योजन
छोडकर बीचमें बिल होते है ।
पटलके मध्य में
इन्द्रक है ।
पंक्ति रुप से
श्रेणी बद्ध है ।
बिखरे हुए
प्रकीर्णक है ।
आकाश
७वीं नरक में
प्रकीर्णक बिल नहीं हैं ।
सप्तम पृथ्वी महातम प्रभा ८००० योजन मोटी
कलकल स्थावर लोक
बादर नित्य निगोद
अनंत आकाश
अनंत अलोकाकाश
सारा लोक तीन स्थिर
वातवलय से घेरा हुआ है।
१. घनोदधि वातवलय
२. घनवातवलय
३. तनुवातवलय
लोक का प्रमाण
लोक १४ राजू ऊँचा है।
उत्तर - दक्षिण सर्वत्र ७ राजू मोटाई
पूर्व - पश्चिम तल में ७ राजू चौडाई
वातवलय के दबाव से लोक का संतुलन है।
घनोदधिवातः पानी मिश्रित हवा - गौमूत्रवर्ण
घनवात = घनहवा - मूंगवर्ण
तनुवात = पतली हवा - अनेकवर्ण
प्रत्येक नरक के अपनी अपनी
संख्या के पटल, बिल
समझना चाहिए ।
क्षती अवगत करें
संदर्भग्रंथ : तिलोय पण्णत्ती, त्रिलोकसार, त्रिलोक भास्कर, तत्वार्थ सूत्र ।
३६", ४८", ६०" के बडे चित्र उपलब्ध है ।
सहयोगीः श्री महेन्द्रभाई कल्याणजी शाह, हैदराबाद
Contact: 09394527686
09395166344

S